बच्चों ने लगाई मदद की गुहार

■ कृषि व किसानों की समस्या के समाधान के लिए नवदान्या संस्था आई आगे

सहारा न्यूज ब्यूरो
दक्षिणी दिल्ली, 30 जनवरी।

अपनी नन्हीं आंखों में पम्मी बाई जैसी गायिका बनने का ख्वाब देखने वाली बारह वर्षीय जसबीर जब अपनी मीठी आवाज में पंजाबी गीत सुनाती है तो हर कोई तारीफ किए बिना नहीं रह पाता। अपनी दर्द भरी आवाज में जब जसबीर गीत 'मां तेरे बीना ननिहाल अच्छा नहीं लगता...' गाती है तो उसके साथ-साथ वहां उपस्थित सभी लोगों की आंखों से आंसू छलक उठते हैं। अन्य लोग जहां उसके आवाज के दर्द को सुन कर रोते हैं वहीं जसबीर अपनी किस्मत और भगवान की नाइंसाफी पर आंसू बहाती है। कारण, गाने में जहां बच्ची अपनी मां की कब्र के पास जा कर रोती है और अपनी मां से वापस लगाने की गुहार लगाती है, वहीं अपनी उस मां से वापस आने को कहती है जो उसके पिता की मौत के बाद तगादादारों से तंग आकर घर छोड़कर चली गयी है। यह कहानी हरित क्रांति की सफलता के बाद सबसे समृद्ध माने जाने राज्य पंजाब के संगरूर जिले के चोटियां गांव की जसबीर की है। उसके किसान पिता जगतार ने कर्ज के ढाई लाख रुपए न चुका पाने व कर्जदारों के रोज-रोज की हुज्जत से आजीज आ आत्महत्या कर ली थी। कीटनाशक सेवन से हुई मौत के बाद उसका शव खेत में पड़ा मिला। इसके बाद भी कर्जदारों के तगादे बंद नहीं हुए तो उसकी मां जसबीर भी बच्चों को वृद्ध सास के पास छोड़कर चली गयी। अब जसबीर के कंधों पर अपने साथ-साथ अपनी दादी और एक छोटे भाई और एक छोटी बहन की जिम्मेदारी है। इस प्रकार की विपत्ति की मारी अकेली जसबीर ही नहीं, जसबीर जैसी हजारों बच्चियां और बच्चे हैं जिनके स्कूल जाने व सपने देखने की उम्र में खेतों में हाड़तोड़ मेहनत कर अपना पेट पालने को मजबूर होना पड़ रहा है और यह सब इसलिए क्योंकि उनके मां-बाप अथवा दोनों ने कर्जदारों के कर्ज न चुका पाने के कारण आत्महत्या कर ली। कृषि व किसानों की समस्या के समाधान के लिए नवदान्या संस्था पंजाब प्रांत में असमय काल के गाल में समाये किसानों के परिजनों की आवाज को सत्ता तक पहुंचाने के लिए राजधानी में गुरूवार को प्रदर्शन करेगा, जिसमें जसबीर जैसी तमाम बच्चियां अपने सपनों के बारे में पत्रकारों को बताएंगी। इस बीच बुधवार को महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर ये बच्चियां पत्रकारों से मुखातिब हुईं और उन्हें अपनी परेशानी बताई।